॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः ॥

* श्रीकृष्णदासकीर्तन *

इस में अनेक भजन भगवद्भक्ति और ईश्वर गुणानुवाद तथा विनय के पद नवीन तर्ज़ के गायनों में वर्णित हैं.

सम्वत् १९७९

जेलप्रेस जयपुर

* श्रीराधाकृष्णाभ्यान्नमः

॥ वन्दना ॥

श्रीराधाकृष्ण प्यारे के चरणों को साष्टाङ्ग प्रणाम है। हे प्रभु गोविन्दजी आप सब गरीबों और दीनों की सुनते हो, वे जो चाहते हैं आप सब इच्छा पूर्ण करते हो, और आप सब बड़ों और छोटों की पैज राखते हो, जो आपही ऐसा न करो तो यह पृथ्वी कलियुग में क्योंकर ठहरे। हरिकृष्णदास की भी एक अर्ज सरकार के चरणों में कहनी है सो आपको कबूल करनी चाहिये और यह जो "कृष्णदासकीर्त्तन" है इस में आपको सलाह मिलानी चाहिए और जो भूल होय वह माफ फर्मानी चाहिए। में जो कुछभी लायक नहीं हूँ फिर इतनी बड़ी अभिलाषा करताहूँ यह मेराबहुत ही मूर्खपन है यह मेरीबहुत बड़ीभूल है, पर क्या है बड़ोंके सहारे से चींटी पहाड़ उठा सकती है। जब ऐसाही होगया तो मैं तो श्रीराधाकृष्ण का पुत्र हूँ, कृष्णदास कीर्तन तो क्या श्री गुरु के सहारे से बहुत भारी ग्रन्थ भी बना सकता हूँ। हे कृष्ण प्यारे! यह जो बड़ा और भारी संसार है इस में बड़े२ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद ये सब मकर सर्प आदि हैं और मेरी जो टूटी नाव है यह बीच ही में झुल रही है, इसको पार लगाने वाला और थाह बताने वाला नहीं सूझता है, कहीं टूटी नाव बिखर न जाय और इन मकर साँपों की मनचाही न होजाय इसलिए मैं बहुत दीनता से यह बिनती करता हूँ कि मैं जब से जन्म लिया है तब से लेकर जीऊँ जबतक आप ही के शरण रहूँ और आप ही मेरी जब से अबतक पारलगाई है और सदा लगावोगे। हे करुणा सागर! हे पातक नाशक! आपको हज़ार बार धन्यवाद है। मेरे जैसे ग़रीबों की आपही सुनते हो आपको क्रोड़ बार नमोनमः, हे ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः। हे दीनबन्धु! हे करुणानिधान! हे दीनदयालु! हे दीनहितकारी! हे पतितपावन! हे अधम-उधारन! हे करुणासागर! हे दुष्टकुल घालक! हे ग़रीबोंके आधार! हे ब्रजजन-[illegible]! हे प्राणाधार! हे निर्गुण के धनी! हे गुणों के निधान! मोपै दया करो, महर रक्खो, मेरे शिर पर अपने हस्तकमल की छाया रक्खो, मेरे अवगुण पर चित्त न धरो। आपका यह जो समदर्शीपन है उसमें कुछभी फ़र्क न होने दो। आप ऐसे हैं कि अपना प्रण तो जाय, पर अपने भक्त की लाज न जाय। आ हा हा वारीजाऊँ श्री गिरिधर आप के चरणों के। श्री राधाकृष्ण के चरणों में मेरी अनन्त २ प्रणाम हो।

* श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः *

॥ अथ कृष्णदास कीर्त्तन प्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

मङ्गल करन आनन्द करन, कष्ट हरन गनराज ।
सब देवन में, पूज्य हो, राखो मेरी लाज ॥ १ ॥
विघ्न हरन पातक हरन, मङ्गल करो गणेश ।
मो निर्गुण निर्बुद्धि के, मेटो सकल कलेश ॥ २ ॥
शुभ मति शुभ बुद्धि देवो, श्री शारदा माय ।
ब्रह्मपुत्रि श्री सरस्वति, मैं बालक तुम माय ॥ ३ ॥
श्री गुरु जय गोविन्द प्रभु, नमो नमो हर बार ।
कृष्ण चरित भिक्षा मोहि, देवो गुरु दातार ॥ ४ ॥
श्री राधा गोपालजी, श्री गोविन्द दयाल ।
मम इच्छा पूरण होवे, यही देवो वरदान ॥ ५ ॥
सुनो वीनती सांवरे, हे गोपिन के नाथ ।
मो अनाथ को हाथ गहि, राखो अपने साथ ॥ ६ ॥
कष्ट हरो दुविधा हरो, पीर हरो गोपाल ।
जग तारन भव कूप से, काढो श्री गोपाल ॥ ७ ॥
सांवरिया सरदारजी, मो शिर राखो हाथ ।
और कछू माँगू नहीं, तुम भक्ति पाऊं नाथ ॥ ८ ॥

सोरठा

धन ये सा खरीपीर, धन धन वृज की गोपिका ।
जहां विराजे आप, गो रक्षक गोलोक धनि ॥ ९ ॥

दोहा

विनती सुन करुणा करो, कृष्णचन्द्र महाराज ।
कृष्णदास को बख्शिये, सकल मनोरथ साज ॥ १० ॥
लीला अपरम्पार है, कोउन पायो पार ।
गिनत गिनत शारद थकी, मैं कस पाऊँ पार ॥ ११ ॥
शरण शरण हूँ शरण तेरे, प्रतिपालो गोपाल ।
कृष्णदास के काज सब, सिद्ध करो तत्काल ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय गोविन्द जगत सहाई । ममइच्छा पूरण सुखदाई ॥
जो इच्छा मेरे उर माँही । प्रभु जानत कछु अन्तर नाँहीं ॥
सभी लिखन्त में आप विराजे । बिगड़े अक्षर आप सुधारे ॥
अधरम, कपट, लोभ है जेता । तुम टारो मेरे साहिब मीता ॥
कृष्णदास की यह ही अरजी । श्रीगिरधर पूरो यही मरजी ॥

भजन १

(माधोसिंह महाराज, इस तर्ज़ में)
जयहो जयहो तेरी गणपति, देवन सरताज ।
जब ध्यानधरूं मैं तेरो । कारज सिद्ध होय सब मेरो ।
मैं मांगू यही बरदान ॥ गणपति० ॥
विद्या देवो मोहि भरपूरी । कृष्णदास पै दयाहो जरूरी ।
चरणों पै धरूँ मैं माथ ॥ गणपतिदेवन सिरताज ॥

भजन २

(दहीवाली का तोर जनाना । इसतर्ज़ में)
सुनो श्री गणपति महाराज । मोय बुद्धि बुद्धि बुद्धि दो ॥
घर और जर नहीं माँगूं । मैं तुमपै कृष्णदास को भक्ति ॥
तेरी बख्शो बख्शो-विघ्नहरण दाता ॥ मोय बुद्धि० ॥

भजन ३

(मैं जोगी जस गाया रे बाला । इसतर्ज़ में)
मेरी सहायक हो पार्वती मात । मेरी सहायक हो शक्ति ॥
मनवच कर्म दया ते मइया । देवो अचल मोय भक्ति ॥
लक्ष्मी, सुरसति सती पार्वती । नाम तुम्हारो अनन्ती ॥
शंकरजी के बायें अंग में । सहस कलासे रहती ॥
जल थल पवन आकाश पृथ्वी । तुम बल से ये रहती ॥
कृष्णदास ये विनती सुनावे । मोपर महर करंती ॥
मात मेरी सहायक हो शक्ति ।

भजन ४

(अय राजा मोरा मन बैरागी रे, इसतर्ज़ में)

धनहै गुरुदेवा आपकी प्रभुताई, दीन पालक हो सदाई ॥
मंगल मूरति श्री गुरुदेव की, मेरे हिये में समाई ।
भक्ति मुक्ति के दाता तुम्हीं हो, आवागमन मिटाई ॥ धन है० ॥
अंधे पांगुरे बहरे को गुरु, सुभक्ति देवो सदाई ।
हीन बुद्धिको आप संभारो, कहाँलो करूँ में बड़ाई ॥ धन है० ॥
कृष्णदास करजोरे ठाढो, द्वारे ध्यान लगाई ।
राधामाधव सहित मिलावो, विनती यही में सुनाई ॥ धन है० ॥

भजन ५

(किईलाखों में वदनामी, मेरी कोकीन शहज़ादी । इसतर्ज़ में)

सुनाऊँ क्या विनय तुमको, श्री शङ्कर महाराजा ।
जानते हो आप सब मनकी, पीओ भङ्गा रहो चंगा ॥
हर्पना कुछभी है शोका, रहो पारवती के संगा ।
घोटकर भाँग जब पाऊँ, प्रेम सँग इतनेही में पाऊँ ॥
जो कुछ इच्छा हो वरपाऊँ, रामको रटते हो घटमें ।
राम रस छाया नयनों में, यही कृष्णदास पै हो महर ॥
श्री शङ्कर महाराजा ॥

भजन ६

(झोटा दीज्यो सभार के मेरी सारी न लट के ॥ इसतर्ज़ में)

तुमको है नमो नमो गङ्गे, मेरी पाप नाशिनी ॥
श्री महाराणी, शिवपटराणी, संतों के मन मांहि समानी ॥
सगरकुल पावन करनी ॥ तुमको ० ॥
माधव नृपति हैं पुत्र तुम्हारे, इनके दुख देवो टारी ।
गरीबों की अर्ज माननी, ॥ तुमको ० ॥
कृष्णदास क्या विनती सुनावे, तन मन की जानन हारी ।
माधव के मनको सुमानी ॥ तुमको है ० ॥

भजन ७

(आओजी आवो मेरी धीरके बंधाने वाले ॥ इसतर्ज़ में)

सूरत ववीजो मेरे हिरदे के मन्दिर माँही ।

आकाश में तपने वाले, अँधेर नशाने वाले ॥ सूरज० ॥
भक्तों के मनमांहीं, भक्ति बढ़ाने वाले ।
माया की रात मांही, सोते को जगाने वाले ॥ सूरज० ॥
कश्यप के नन्दन उदय होते भानु तुमही ।
दिवाकर मार्तण्ड भास्कर नामी तुमही ॥ सूरज० ॥
जगके हो साक्षी तुम्हीं, देवन में हो नामी तुमहीं ।
दीनन के हो दाता तुम्हीं, मेरो दुःख टारो तुम्हीं ॥ सूरज० ॥
कृष्णदास यह विनति करत है, अब छिटकाये नांही बनै है ।
भक्ति मोकों बख़्शो स्वामी ॥ सूरज० ॥

भजन ८

(जोलों हों बैकुण्ठ न जैहौं । इस तर्ज़में)

जय लक्ष्मीपति २ जय जय जय श्री देवन देवा ।
जय लक्ष्मी रमणा जय जय प्रभु तुम चरणों में मेरो चित धरना ॥ जय० ॥
कोटिन पापी छिन में तारे, मो पापी को भी रखो तेरे शरना ॥ जय० ॥
कृष्णदास को निर्भय पददेवो, जन्म २ की आपद हरना ॥ जय० ॥

भजन ९

(अजब अजब अजब, नन्दलाल है अजब । इस तर्ज़में)

आनन्द आनन्द आनन्द गोकुल में है आनन्द ।
मथुरा में है आनन्द, गोलोक में आनन्द ॥ आनन्द० ॥
धन्य यशोदा कूँख तेरी, धन्य नन्द गोप ।
प्रकट भये हैं पूर्ण ब्रह्म, हरि आनन्द कन्द ॥ आनन्द० ॥
सब देव जय जयकार करैं, दें मुबारिक बाद ।
गोपी गावें मङ्गल चार, कृष्णदास हैं प्रसन्न ॥ आनन्द० ॥
आनन्द आनन्द आनन्द गोकुल में है आनन्द ॥

भजन १०

(देखो दिल में विचार, भजो दशरथ दुलार । इस तर्ज़में)

गावो गावो बधाई आवो सब मिलके, गोरी धन्य कीरत की कूँख जनमी राधालली ।
गावो गावो बधाई० ॥

जग में कीरत है छाई, महिमा वेदों ने गाई गउलोक से पधारी कृष्णदास स्वामिनी ।
गावो गावो बधाई० ॥
ग्वालवाल सब नाचे वृषभान हुलसाव दिलमें उमग्यो वृषभान नहीं फूल्यो समाय ।
गावो गावो बधाई० ॥
बरपै रंग मची कीच दधिकी, गैलमांही कृष्णदास कहै धन्य धन्य आज यह घरी,
आज यह घरी आजयह घरी । गावो गावो बधाई० ॥

भजन ११

(वारी जाऊँ रे सांवरिया तोरे वारना रे । इस तर्जमें)
मो मन मांहि बसो श्रीरामा मोरे २ प्यारे रे ।
सास सास में जपूं तेरे नाम को, तेरे विना चैन नहीं है दिलको. राम कौशल्या नन्द
मेरे रखवारे रे ॥ मोमन० ॥
कृष्णदास कहै जोरा जोरी, खैंचत ना प्रभु मेरी डोरी, कबतक गिरो रहूंगो तेरे
द्वार पै रे ॥ मोमन० ॥

भजन १२

(अजब अजब अजब, नन्दलाल है अजब । इस तर्ज में)
माफ़ माफ़ माफ़ मेरी हो चूक माफ़ ।
गोविन्द तुम मुझ दीन की प्रतिपाल करो सदा ॥ माफ़० ॥
क्यों मुझ को तुम संसार में, बहलादिया हुजूर ।
भक्ति तेरी छुडादिई, सब बढ़ा दिया हंकार ॥ माफ़० ॥
न शत्रु मित्र हैं मेरे न हैं पिता न मात ।
एक आंसरा है तेरा प्रभुजी गहो मेरा हाथ ॥ माफ़० ॥
अब कृष्णदास की विनय सुन लीजिए गोपाल ।
चरणों की धूर जान मेरा रखो चरणों में ध्यान ॥ माफ़० ॥

भजन १३

(अरे कान्हां मोरे द्वारे बांसरी बजा । इस तर्ज में)
कन्हैया मोरे आंगन नाचो आय ।
झनक झुनक छुम छुम पग धरके, भावबताय के गाय ॥
कैसे छल बलिया हो तुम नट नागर, गोपिनको मन लियो चुराय ॥ कन्हैया० ॥

बालचरित्र यशोदाय दिखायो देवकी के बंधन दिये कटाय।
कृष्णदास को रस भरीतानें, आय सुनावो जी यदुराय ॥ कन्हैया० ॥

भजन १४

(मेरे तनमनकी कर बतियां सजन को। इस तर्ज़ में)
सुनोजी सांवरिया गोपाल झांकी हमें तेरी क्यांन दिखाते हो।
क्यों दिल में तुम छिपके बैठे हो नयनों के नाहिं सन्मुख आते हो ॥
किये लाखों जतन मैंने पर्दा तुम कान्ह क्योंना हटाते हो
पड़ा सांसा नहीं आशा मेरा यह दुख क्योंना हटाते हो ॥
हे कृष्णदास सुनी हां चर्चा गोविन्द पड़ी भीड़ हटाते हो।

भजन १५

(जायकहो कुवरी को संदेशा। इस तर्ज़ में)
मोघर हरि नाहिं आवन कीन्हो, ओगुन कहा मेरो दयालु ने चीन्हो।
ऐसो कपटी है रे तू सांवरिया, भूलके भी मोकों नहीं दर्शन दीन्हों ॥ मोघर० ॥
सेवाप्रभु तेरी मोसे नाहिं बन आई, खेलमें उमर या बितावन कीन्हों ॥ मोघर० ॥
कृष्णदास पे दया कियेही बनेगी, मेरे मनमें विश्वास यह कीन्हों ॥ मोघर० ॥

भजन १६

(मोये नीकी लागे सुरत तिहारी। इसतर्ज़ में)
अब नहिं भूले बने गिरिधारी, मोकों सांवरिया बिहारी।
करुणा निधान दयालु तुम्हीं हो, महिमा विदित जगमांही ॥ अबनाहिं० ॥
अपात्रन को पावन करो गरीब निवाजो, प्रणयह तेरो सदाही ॥ अबनाहिं० ॥
अब काहे को प्रभु देरकरी है, मेरीबेर क्यों आंख चुराई ॥ अबनाहिं० ॥
कृष्णदास को निर्भय करो तुम, राधावल्लभ मेरे सांई ॥ अबनाहिं० ॥
अब नाहिं भूले बने गिरधारी, मोकों सांवरिया बिहारी ॥ अबनाहिं० ॥

भजन १७

कैसो प्रगट भयो है बृजमेंदू सांवरिया, ऐसो खिलारी भयो के सभी जगको नचायो
॥ कैसोप्रगट भयो० ॥
कहांतो पूतना कंस की चेरी, माता की गतिदई दूधपीवन में वाको जन्म २ को
दुख धोयदियो ॥ कैसो० ॥

अघासुर बत्सासुर बकासुर को पेट चीरयो है काहू को पांव फिरायो काहू की चोंच फार के गऊ लोक पठायो ॥ कैसो ० ॥

बृन्दावन में नित नई लीला गोपिन से करके मथुरा में कुबरी से प्रीति लगाके उन्हें छोड दई है उन को भूल गयो ॥ कैसो० ॥

माखन चुरावै बृजमें ऊधम मचावे मथुरा में जाय मामा कंस को मारचो देवकी बसुदेवजी की कैद छुडाय दियो ॥ कैसो० ॥

कृष्णदास को तैनें जन्म से निभायो अबभी करते हैं आस रखोगे मेरी लाज बिरद जान के मोय दास बनायो ॥ कैसो प्रगट० ॥

भजन १८

(सखीरी मोरा सैयां निपट नादान । इस तर्ज़ में)

सखी मोहन प्यारे दरस ना देवे मोय ।
वाके मनाने को जतन न आवे मोय ॥ सखी० ॥

॥ दोहा ॥

एरी सखी मैं कहा करूं, मोहन बडे कठोर ।
उनके दर्शन के बिना, तलफत है जिय मोर ॥
ऐसो हितू है को वासे मिलावे मोय ॥ सखी० ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सतयुग में सचश्यामथे, श्वेतहि कियो सुरूप ।
कलियुग मे कपटी भये, कारो कियो स्वरूप ॥
कारेको नाहीं पतियारो आवे मोय ॥ सखी० २ ॥

॥ दोहा ॥

सुधरी हरी विगारदे, बिगरी सुधारे पलमांय ।
ऐसे छलिया कृष्णको, भेदन कोऊ पाय ॥
वाहीने डारचो माया के फन्द में मोय ॥ सखी० ३ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णदास की नाव यह, गिरी बीच मझधार ।
गोविन्द कृष्ण दयालजी, आपलगावो पार ॥

नैया मेरी खेये ही बनेगी तोय । सखी० ४

भजन १९

(इलाही वोभी दिन होवे कि मैंहूं और सनम दोऊ । इसतर्ज़में)

श्रीसतदेव तेरे दासों में मुझ को भी गिनवावो ।
तुम्हारा नाम दयालु है दया मुझ पै भी दरसावो ॥ श्रीसत० ॥
क्यातुम लक्ष्मी केही स्वामी हमारे हो नहीं महाराज ।
फिर क्यों हमसे छिपे बैठे प्रगट कर झांकि दिखलावो ॥ श्रीसत० ॥
तेरा दरबार आला है तू सब जग से निराला है ।
तेरे दरबार में मेरा गुजर दमभरही करवावो ॥ श्रीसत० ॥
तमन्ना यह मेरे दिल में सुनो लक्ष्मीपती प्यारे ।
कहे कृष्णदास तू मेरा बचन इतना हि फ़रमावो ॥ श्रीसत० ॥

भजन २०

(दुलहन हरियारी रे घनी फूलवनी रे । इसतर्ज़में बधाई)

आवोसखी सबमिलके गावो मुबारक बाद ।
नन्दजी के लाल भयो सब मङ्गल चार मनाये, गउ लोकके नाथ देवन के सरताज ।
आवो सखी० ॥
ब्रह्मा शिव मिल तंबूरा लाये, नारद वीनबजाय दर्शनकर हरखाये पुष्पनमेह बरसाय ।
आवो सखी० ॥
कंस निकन्दन अवतरे हैं ब्रज को कियो सनाथ, सन्तन के हितकार कृष्णदास के नाथ ।
आवो सखी० ॥

सोरठ भजन २१

अपना विसारियो अजीकाना मोसे दीनको मोशरणागत को ।
अजामील पापी से तारे मेरीबेर भये चूप क्यों ।
हां या नां तो कुछ बोलोजी काना मौन गही अब क्यों
कृष्णदास को अपनो जानके हँसके गहीं बाहें क्यो ॥ अपना० ॥

भजन २२

राधेश्याम सुन लीजिए विनती मोरी महाराज ।
मैंतो शरणकी आपकी, कृपा कीजिये महाराज २ ॥ राधे० ॥

पापी मैं बहुत नीच हूं कुछ ध्यान नहीं है।
तुम चरण से लगी लाज, रखलीजिए महाराज २ ॥ राधे० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर अनाथ के नाथ कहलाते।
अब पार मेरा बेड़ा, लगा दीजिए महाराज २ ॥ राधे० ॥

भजन २३

(प्रीतका करके निभाना बड़ी मुश्किल है। इसतर्ज़ में)
गोविन्द शरण का निभाना बड़ी मुश्किल है।
बड़े २ पापिन को तो तारा तुम्हीने, मुझ पापी को तिराना बड़ी मुश्किल है।
गोविन्द० ॥
काहे निठुर होत हो गोविन्द, बांहें छुड़ाके जाना बड़ी मुश्किल है।
गोविन्द० ॥
भक्तन को तो त्यारो सदाहम, बिन भक्ति मुझ को तिराना बड़ी मुश्किल है
गोविन्द० ॥
संकट सबके काटन हारे, मेरी यम फांसी कटाना बड़ी मुश्किल है।
गोविन्द० ॥
राईको परवत करो छिन में, प्रभुजी कृष्णदास की बिगड़ी बनाना नहीं मुश्किल है।

भजन २४

(बहुतेरा समझायोरी मन मोरा। इसतर्ज़ में)
गोविन्द शरण आयोरे मन मोरा।
गोविन्द मोरा मन है पापी, तोरी आस तक आयोरे मनमोरा ॥ गोविन्द० ॥
गोविन्द सब देवन के स्वामी दयालु जान शरण आयोरे मनमोरा ॥ गोवि० ॥
कृष्णदास तोरे चरणों में पडो है अबकाहे तरसावोरे मनमोरा ॥ गोवि० ॥

भजन २५

(कैसे समझाऊँ जिया मानत नाहीं। इसतर्ज़ में)
कैसे मैं मनाऊँ गोविन्द मानत नाहीं।
विनती कर कर हाथजोड़त हूं, चरण गह २ के हारी।
मेरे गुनां प्रभु माफ करो रे, बार बार कह के हारी ॥
मेरी अरज विनतेरे सांवरे सुनाऊ कौनको राधा मोहन मानत नाहीं ॥ कैसे मैं० ॥

भजन २६

(जाय कहो कुबरी को संदेशा । इस तर्ज में)
किसविधि तोड़ी प्रीति सांवरे, सुधि मोरी बिसराई ॥ सांवरे० ॥
झूँठे वचन दे फिर सच बोले, तू कपटी बेपीर ॥ सांवरे० ॥
नेहकी नाव पर चढाय सांवरे, छोड़ी मझधारा के बीच ॥ सांवरे० ॥
हाथजोड़ तोरे चरण परतहूँ, एक नजरभर देखो ।
कृष्णदास की शरम तोको पियारे लाज गई को राखो ॥ सांवरे० ॥

भजन २७

(सैयाँ लगेरी दुखदेन । इस तर्ज में)
म्हारी भी अरजी सुनज्यो गोविन्द प्यारोरे ।
सै हम से कान देकर थे सुनज्यो सै हम से नहीं तो दोई ।
पापकमाया धर्म डुबोया लाज तुम्हें गिरधारी लाज तुम्हें वनवारी ॥
चलत फिरत जागत सोवत सबतुम अर्पण गिरधारी ।
कृष्णदास की अरज कानदे सुनलीजे गिरधारी ॥ म्हारी० ॥

भजन २८

(हमने उनके सामने अव्वल तो खंजर रखदिया । इसतर्ज में)
राधेश्याम के जो दर्शन ना किया तो क्या किया ।
खापीके मस्ताना हुवा खुश होजिया तो क्या जिया ॥ राधे० ॥
मन्दिर में नागया चरण से दर्शन नाकिये नेत्र से ।
राधे श्यामके जो चरण न छुये तो क्या जिया ॥ राधे० ॥
दुनियां के ऐश आराम में भगवान को भुलादिया ।
कृष्णदास अब देखो गुरु चितवाय तुझ को देदिया ॥ राधे० ॥

भजन २९

(प्रभू मैं चेरो हूं तेरो । इसतर्ज में)
कृष्ण मैं दासी हूं तेरी । कृष्ण० ।
दीनदयाल कृपा करो मोपै, आई शरण मैं तेरी ॥ कृष्ण० ॥
हे भगवान् भक्त भय हारी, टारो विपति मेरी ।
मेरीनाव धारा बिच अटकी, खेवो वनवारी ॥ कृष्ण० ॥
मैं अनाथ मेरे साथनहीं कोई, एक टेक तुमरी !

ध्रू प्रह्लाद गज गणिका तारे, भक्तन हितकारी ॥ कृष्ण० ॥
राधापति बृजराज सांवरे, अरज सुनो मेरी ।
कृष्णदास के स्वामी त्रास मिटावो, जमको है डरभारी ॥ कृष्ण० ॥

भजन ३०

अरज तुम सुनो श्रीमहाराज ।
मैं तोरे शरण अब आई शरण आयेकी राखो लाज ॥ अरज० ॥
नाव टुटी नदिया गहरी अब मझधारा में खड़ी पुकारत हूं चेरी तेरी ॥ अरज० ॥
बहुत मैं पाप किये महाराज कुछ गिनती भी नहीं है शुमार नाममेरो सुनत गये यम भी त्याग ॥ अरज० ॥
हमी हैं अनाथ एक तुंही नाथ तोरी शरण छोड जाय कौन पास लाज राखो श्री महाराज ॥ अरज० ॥
कहै कृष्णदास सुनो बृजराज तोरे चरणों की देवो भक्ति मुझको वृन्दावन का बास ।
अरज तुम सुनो श्री महाराज ।

भजन ३१

(बिगड़ी क्योंन बनाई नाथ तैंने बिगड़ी क्योंन बनाई । इसतर्ज़ में)
कबकी शरण आई नाथ तोरे, अबतो पार लगावो जी ।
गहरी नदिया नाव पुराणी, अधबिच झोखे खावेजी ॥
कलियुग कठिन है तीखी धार को, यासे मोहि बचावोजी ।
तेरी माया है जाल मोह को, यासे मोहि छुड़ावोजी ।
कृष्णदास कहै बारबार प्रभु, विनती यही मोरी सुनियेजी ।

भजन ३२

(चलो सखि देखिये बन में जहां हरिरास रचाता है । इसतर्ज़ में)
चलो सखी देखिये बनमें, जहां ब्रजराज नाचत है ।
पगमें झाँझरया बाजै वह मुखसे राग गाता है ॥ चलो० ॥
करके दर्शन आई मैं ये मनतो वहां ही जाता है ।
कृष्णदास कहै वह मोहनजी मेरे दिलमें खटकता है ॥ चलो० ॥

भजन ३३

(श्री दरबार आपको दरस मोयभावे ! इसतर्ज़ में)

श्रीसत देव आपको सदा गुन गाऊँ।

जगत गुरु तोरी शरण में आई तुम तज अन्तन जाऊं ॥ श्रीसत० ॥
तुमरो ही नाम जपूं निशि दिन में तुम कोही शीश नवाऊं ॥ श्रीसत० ॥
लाज रखैया तुम पार करैया तुम. तुमको ही अरज सुनाऊं ॥ श्रीसत० ॥
काम क्रोध मद लोभ बसे मन में, तुम को कैसे ध्याऊं ॥ श्रीसत० ॥
कृष्णदास की अरज सदा तोरे, चरणों में ध्यान लगाऊं ॥ श्रीसत० ॥

भजन आरती ३४

(लटकत चलत जुगल सुखदानी । इस तर्ज में)

आरती करो श्री सुरज देव की ।
नमो नमो आदित्य स्वामी, नमो नमो भास्कर प्रभुजी ॥ आरती० ॥
कंचन थाल कपूर की वाती, गले माला पहरावो पुष्पकी ॥ आरती० ॥
कृष्णदास यह अरज करत है, चरण शरण में राखो प्रभुजी ॥ आरती० ॥

भजन ३५

राधे श्याम की में शरण गही हूं, वाकी शरण आँ हाँ रे वाकी शरण पड़ी ।
राधे श्याम ० ॥
दृढ मन करके मैंने शरण गही हूं गाढी शरण आं हां रे तोरे शरणे पड़ी ।
राधे श्याम० ।
राधा कृष्ण गौलोक वासी गौलोक की छवि दिलमें अड़ी है मोरे दिल में अड़ी
राधे श्याम० ।
पापी कलियुग से मोहि गोविन्द बचावो, रामको तजूँ नांहिं एकघड़ी तजूंना एकघड़ी ।
राधे श्याम० ।
मैंहूं पतित तुम पतित पावन हो, पतित तारन को तोरी कृपावड़ी है तोरी कृपावड़ी ।
राधे श्याम० ।
कृष्णदास के स्वामी श्यामा अधम उधारन की तो वान पड़ी तोय बानपड़ी ।
राधे श्याम० ।

भजन ३६

(हायरे मैं हुई लाचार । नाटक की तर्ज में)

हायरे मैं पापीहूं महान, कैसे मोको तारोगे आप श्रीभगवान; राम राम राम रामरे। हा०.
मेरे पाप का थाह नहीं है सुनो श्री राधेश्याम ।

मेरे गुप्त प्रकट सब पाप हैं जो अबतेरे अर्पण गोपाल, राम ४ रे ॥ हायरे० ॥
सुबुद्धि कुबुद्धि के तुमहो दाता, तुम से कौन दुराव ।
या भव सागर में मोय घुमायो, कियोहाल वेहाल, राम ४ रे ॥ हायरे० ॥
कुकर्म छल बल सब मेरे मिटावो, अपनो जान ब्रजनाथ हरी ।
कृष्णदास को अपनावो अब, राधापति नन्दलाल, राम ४ रे ॥ हायरे० ॥

भजन ३७

कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द मुकुट वारे शरण तोरी लीहै मैने मारी. हाँरे मैने भारी। कृष्ण०
अधम को उधारो नाथ, पतित को तिरावो नाथ। संकट मेरे काटो नाथ सांवरे बिहारी, हां हां रे विहारी सांवरे विहारी ॥ कृष्ण० ॥
कहाँ जाय ढूँढू तोय, कहां छुप्यो बैठ रह्यो। माया मे मोहि फाँस दियो वाह रे खिलारी, हां हां रे विहारी ॥ कृष्ण० ॥
टेरत हूँ बेर बेर, सुनत नांहि मेरी टेर। कांन मूंद बैठ रह्यो बांके विहारी, हां हां रे बिहारी ॥ कृष्ण० ॥
कृष्णदास द्वारे अड्यो, अरज करत टरत नांहीं। अवतो मेरी राखो लाज कुन्जविहारी, हां हां रे विहारी साँवरे विहारी ॥ कृष्ण चन्द्र० ॥

भजन ३८

(महारानीजी पायें सदा राहत। इस तर्ज़ में)

श्री सत देव सतदेव भजो मन रे।
सत को भूल्यां रे मनवा तुझे नासरे ॥ श्री सत० ॥
सत से आकाश पृथ्वी तपते, सत विरामे हृदय मांही
दिल में करले ध्यान कर ध्यान ॥ श्री सत० ॥
या जग में तेरो कौन संगाती, मुँह पर हांहां पीछे नांही
करले विचार ले विचार ॥ श्री सत० ॥
कृष्णदास सब आश छोडकर, गिरो चरण की शरण में आकर ।
मन में निश्चय धार ये धार ॥ श्री सत देव० ॥

भजन दादरा ३९

सुनोजी विनती श्री गोपाल मेरी बिगडी बना ने वाले ॥ सुनो० ॥
मुझ से भक्ति नहीं बनआई, मैंने पाप में ध्यान लगाई।
माया के चक्कर में मोहि डार के आप अकेले रहने वाले ॥ सुनो० ॥

मुझ को मोह में लिपटाया है, इस में लाभही तुम को क्या है।
आप का तो खेल हुवा महाराज, मेरी हँसी उड़ाने वाले ॥ सुनो० ॥
कृष्णदास को अपनी पड़ी क्या, गोविन्द का शरणा है फिर क्या।
भली बुरी के मालिक हैं वे, लाजगई को रखने वाले ॥ सुनो० ॥

भजन ४०

(लुलजाऊँ रे झुकजाऊँ रे म्हारा हरिया। इस तर्ज़ में)

शरणे रे थारें रे म्हारा कन्हैया, ओरे म्हारा साँवरिया।
जी उदर में जन्म दियो थे मोकों, कोल वचन कियो थां से।
जीऊँ जबतक थानें भजस्यूँ, सांची याही भाखूँ रे ॥ म्हारा० ॥
जी जब थे बाहर नाख्यो, मोकों माता हाथां राख्यो।
प्यार चाव से मोद बढायो, बहुतही लाड लड़ायो रे ॥ म्हारा० ॥
जी बालपणों हँस खेलगमायो, जबानी गर्व गर्रायो।
अधरम कपट लोभ में भरम्यो, धर्म से चित्त हटायोरे ॥ म्हारा० ॥
जी मैं हूँ पुत्र तुम्हारो प्रभुजी, तुमहो पिता हमारे।
पाप से मोकों दूर हटावो, कृष्णदास छे थांकोरे ॥ म्हारा० ॥

भजन ४१

(सैयाँ लगेरी दुख देन। इस तर्ज़ में)

काहे को देर करी अजी बंशीवारा रे।
ध्याऊँ मैं तोय को, मनाऊँ मैं तोय को, अजहूँ ना झलक दिखाई ॥ काहे० ॥
गाँठ कपट की खोलत क्योंना, जानूं ना तेरी चतुराई ॥ काहे० ॥
नाम सुनत मेरो मौनगही क्यों, अंगुली कानों में लगाई ॥ काहे० ॥

भजन ४२

(गावो बधाई सभी सखियां मिल मुबारक गावो। इस तर्ज़ में)-
सुनोजी सांवरे गोपाल मेरी अरज ज़रा।
तुम्हारे सुन ने से निकले मेरे अरमांन ज़रा ॥ सुनोजी० ॥
मेरी यह जान भी तेरी, यह तन भी है तेरा।
जो कुछ इस तन से बन आया भला बुरा तेरा ॥ सुनोजी० ॥
सुना है हमने भी दीनों के तुम हो हितकारी।

ग़रीब मैं पड़ा जहान में बीमार तेरा ॥ सुनोजी० ॥
तुम्हारे भक्तों की है आन नटारो तुम मुझे।
लगावो चरणों से अपने मुझे भगवान ज़रा ॥ सुनोजी० ॥
यह कृष्णदास की आश सुनोजी कान्हा।
ज़बाँ पै नाम तेरा दिल में रहे ध्यान तेरा ॥ सुनोजी० ॥

भजन ४३

(मैंतो मजनू ज्यान दिल से आप पर बलिहार हूँ। इस तर्ज़ में)

मैं तो मोहन प्यारे दिल से आप पर बलिहार हूँ।
क्या करूं गुनहगार दिल से तो बहुत लाचार हूँ ॥ मैंतो० ॥
काम और इस क्रोध से बेबश भया है जी मेरा।
माया के जाल में खारहा गोता बहुत हैरान हूँ ॥ मैंतो० ॥
इस भरम दुखसे तो गोविन्द, आप ही टारो मुझे।
कृष्णदास दामन न छोड़े बांधे कमर तैयार है ॥ मैंतो० ॥

भजन ४४

(सरकार महल में आवो। इस तर्ज़ में)

गोविन्द महर फरमावो, मुझे अपना वो दयालावो ॥ गोविन्द० ॥
साँवरिया सुनो बतियाँ, हम से दिल नांहीं चुरावो ॥ गोवि० ॥
कृष्णदास करे विनती, चरणों से नेह लगावो ॥ गोवि० ॥

भजन ४५

(प्रियतम तुम्हरी प्रीति में प्यारे, जियरा निकसो जावत है। इस तर्ज़ में।)

ओ छैल छबीले मनमोहन मोसे, प्रीतिलगा फिर क्यों सटके।
तो से छलबलिया से मन को लगा, हैरान हो चित बन बन भटके ॥ ओछैल० ॥

॥ शेर ॥

कहां वो दानी है जो दधि पै रोज झगड़े था।
कहां वो चोर है जो माखन चुरा के खावे था।
कहां वो रास है जो रस में रंग बरसाता था।
कहां वो कृष्ण है बिनदेखे जी न रहता था।
अब दरसों गुजरे हैं देखेबिना वो कुब्जा के दिल में जा बैठे। ओछैल०

॥ शेर ॥

कहो ये जायके ऊधो हमारी मोहन से ।
बिना दरश के न टरते हैं प्राण इस तन से ।
जो कुछ खता हुई वो माफ हमारी बख्शे ।
लगावो आय गले से न्वाँ यही निक से ।
कृष्णदास कहै सुनो दयाल हरी, मन दृढ़ करो कभी ना भटके ।
ओ छैलछबीले मन मोहन मोसे प्रीति लगा फिर क्यों सटके ।

भजन ४६

(भर के जाम, भर के जाम, साक़िया । इस तर्ज़ में)

हे गोपाल हे गोपाल आप ही करोगे बेड़ा मेरा पार आप पै आस ॥ हे गोपाल० ॥
सुख में दुख में रहोजी संग, मुझ को ना करो तुम पल भी दूर, नन्द नदन, हो जी
तारन तरन आप ही रखोगे मेरी ये लाज, हे भगवान होजी दयाल, हाँ हाँ आवोजी
आवो लगावोजी चरणों से शरण पड्यो तेरे कृष्णदास ॥ हे गोपाल० ॥

भजन ४७

(दिखादो भीख दर्शन की नवी थारी भिखारिन छूँ । इस तर्ज़ में)

जीवों के परम धन हो आप, सूरज तुम जग उजाला हो ।
प्रगट जस छाया है तेरा, भूले को राह बताते हो ।
डूबे को थाह बताते हो, भरम से मन हटाते हो ।
फसा है दिल कपट के मैल में, हुवा कृष्णदास हैरान ।
दुविधा आप ही मेटो, सूरज तुम जग उजाला हो ।

भजन ४८

(ऐ जान मेरी ज़माना बुरा है । इस तर्ज़ में)

श्याम न हो वो मुझसे पल भर भी दूरी । तुम को कसम है जी मेरी है ज़ारी ॥ श्याम० ॥
ध्यान ज्ञान से मैं वाकिफ़ नहीं हूँ, भजन की मुझ पर हो महर भी पूरी ॥ श्याम० ॥
अपने भक्तों से तो परदा नहीं करते, हम से छुपाचो क्यों सूरत ये प्यारी ॥ श्याम० ॥
कृष्णदास ने ये टेर लगाई, कान दे सुन लेना कृष्ण जरूरी ॥ श्याम० ॥

भजन ४९

(हे तुम हो हर की प्यारी महारानी हो। इस तर्ज़ में)
अटके हो कहाँ कृष्ण पियारे मेरे बिलमाया किसने।
बरसाने की कुंज गलिन में छुप्यो. ढूंढि नाहिं पाये ॥ अट के० ॥
हा राधासी प्यारी छोड के मथुरा चले कैसे हो कपटी ॥ अट के० ॥
है कारी सी कुबजा कारो ही कान्ह मिल्यो है जैसी को तैसो ॥ अटके ०
हे कृष्णदास को अपनो ही करजानो जीवन धन तुमही ॥ अटके० ॥
कृष्ण पियारे मेरे, अटके हो कहां।

भजन ५०

(घर से यहां कौन खुदा के लिए लाया मुझ को। इस तर्ज़ में)
बाँसुरिया के फंदे में फँसाया तैंने।
मुझ को हैरान परेशान बनाया तैंने। बाँसरिया०
देव भी मोहे जपी तपी लुभाये इस में मैंहूँ।
एक जीव नाकुछ उस को भी फाँसा तैंने ॥ बाँसरिया० ॥
चित को चौरंग किया मन को भी मस्ताना किया।
दिल को दीवाना किया होश भुलाया तैंने ॥ बाँसरिया० ॥
जो निराकार है माया से छुड़ावेगा मुझे।
यह कृष्णदास को ढाढ़स भी बंधाया तैंने ॥ बाँसरिया० ॥

भजन ५१

गोविन्द प्यारे हम को भी दर्श दिखावो।
सब देवन में भेद नहीं करते, अब क्यों कपट चलावो।
फिर दयालु कहावो। गोविन्द०।
बिरद निभावन नाम तुम्हारो, अपने मौंहु लजावो।
ज़रातो शरम लावो। गोविन्द०।
कृष्णदास की बेर गोविन्द जी, गरुड छोड़ झट आवो।
हाँ हाँ बिलम्ब न लावो। गोविन्द०।

भजन ५२

(तेरी ध्यान पर फ़िदा हूँ, चाहे बोलो या न बोलो ॥ इस तर्ज़
राधा कृष्ण प्यारे, मेरे नयनों में आ समावो।

सुन्दर सजीली जोड़ी, चित में मेरे बसावो ॥ राधा० ॥
किस श्यान से मुरारी, सृष्टी रची है सारी ।
हम को भी हाँ निराली, वो छवि ज़रा दिखावो ॥ राधा० ॥
करो महर मुझ पै गिरधर, तेरो हूँ दास मैं बदतर ।
मुझ पर करम करोजी, मुझ पै दया भी लावो ॥ राधा० ॥
अब कृष्णदास तेरो चेरो सदा गुसाईं ।
यह नेह नाहिं तोड़ो अपनो विरद निभावो ॥ राधा० ॥

भजन ५३

मोकों त्यारो जी त्यारो, गोविन्द नइया खेवो ॥ मोकों० ॥
महा पापिन को तार दिये प्रभु, अब क्यों देर लगावो ।
गहरी नींद में पड़े रहे हो नैंक तो नयन उघारो ॥ मोकों० ॥
राहबाट में किन बिलमाये, विचार कहा दिल में लावो ।
कृष्णदास तो हट नाहिं छोड़े, बांहें गहो दुख टारो ॥ मोकों० ॥

भजन ५४

गोविन्द की गति गोविंद जाने, गोविन्द महिमा कोउ न जाने ।
गोविन्द अलख अगोचर है उन के अक्षर को आप उघारे ॥ गोविन्द० ॥
सूरज तपते जिनके तेज से, चन्द्रमा शीतल भयो है इन से ।
जल थल में व्यापक है सोही, समझ देख नर नयन उघारे ॥ गोविंद० ॥
अपने घमंड में भयो है बावरो, ज्ञान तोहि तिन का भर नाहीं ।
काम क्रोध के वश में भयो तू, जिन ने बांध्यो है भुज बलगाढे ॥ गोविन्द ॥
जो ईश्वर है सब दुख हरता, पालन करत है सृष्टि ये सारी ।
कृष्णदास मन निश्चय राखो, वोही खेवट तोहिं पार उतारे ॥ गोविन्द० ॥

भजन ५५

(काशी बनारस द्वारिका, गंगा न्हाये तो क्या हुआ ॥ इस तर्ज़ में)
मेरे कृष्ण प्यारे से मेरी, किस दिन रसाई होयगी ।
देखें चमन में गुल कब खिले वो बहार भी कब आयगी ॥ मेरे० ॥
इस दरियाये ग़म में मेरा ये, जीव बहुत दुख पारहा ।
वो बाहें मेरी कब गहे, वो झाँकी नज़र कब आयगी ॥ मेरे० ॥
मेरे हसरते अरमान है दिल में बहुत किस से कहूँ ।

गोविन्द सुनें तो क्यों करूँ उन के सुन ने से थिरता भई ॥ मेरे० ॥
कृष्णदास की है अर्ज यह गुरु किरपा करो विपता हरो।
मेरी आश यह पूरण करो, श्री कृष्ण रटना लग गई ॥ मेरे० ॥

भजन ५६

(अय ज़रीरो अय नटमारो, हाज़िर है तो फ़रमावो ॥ इस तर्ज़ में) ॥
गोविन्द प्यारा, गोविन्द प्यारा, गोविन्द प्यारा मेरा है।
गोविन्द प्यारा, त्रिलोकि मालिक जगपालक जग दाता है ॥ गोविन्द० ॥
तूही करता तूही भरता तूही सब दुख हरता है।
तूही गुण अवगुण पर मेरे महर प्रभूजी करता है ॥ गोविन्द० ॥
कैसे हे प्रभु प्रसन्न होते, जतन कछुक मोय बतलावो।
कृष्णदास कर जोरे ठाढ़ा, विनती यही सुनाता है ॥ गोविन्द० ॥

भजन ५७

(नहीं अब मोत से है रिहाई २ हाय ॥ इस तर्ज़ में)।
मोपै महर करो श्री गोविन्द प्यारे राम।
मैं तो बाट तिहारी जोऊँ प्यारे राम ॥ मोपै० ॥
कैसे ढील करी प्रभु मेरी बिरियाँ राम।
मेरे मोहन किन बिलमाये तोकों राम ॥ मोपै० ॥
मैं हूँ दास तिहारो रामा, मोय मतीना बिसारो रामा, नेंक मेरी और हेरो,
कृष्णदास, है निरास, पूर्ण करो आस, मेरी राम ॥ मोपै० ॥

भजन होरी ५८

(साँवरो मोरे आँगन खेले फ़ागरी माई। इस तर्ज़ में)
कासंग खेलूँरी मो घर में नहीं कान्हरी माई।
सब पीतम संग होरीखेलत है, मोकों सुहावे ना फ़ागरी ॥ कासंग० ॥
कृष्णदास के नाथ पधारे, राधादौड़ी पासरी ॥ कासंग० ॥

भजन ५९

एजी मोहन प्यारे मेरे मोहन प्यारे, नेक घर अइयो दरशदिखाइयो ॥ एजी० ॥
बिछुडन सहज मिलन है मुश्किल, कबतक हमैं तरसइयो ॥ एजी० ॥
तुम तो हठी लेहठ नहि छोड़ो, मुश्किल से पेच में आवो।
कृष्णदास को भूलगये क्यों, नेक महर दिल में लावो ॥ एजी० ॥

भजन ६०

हरि का जीवड़ारे हरि क्यों ना भजो, प्रभु क्यों ना भजो ॥ प्रभु० ॥
गर्भ अग्नि में जिन ने तोय राख्यो, रे उन को भूलगयो ॥ प्रभु० ॥
पाँच चोर तेरे उर भीतर रे, जिन ने तोय झपट लियो ॥ प्रभु० ॥
ऐश करन की ज्यों २ चाहै रे, त्यों २ दुखही भयो ॥ प्रभु० ॥
कृष्णदास जब निर्भय होवोगे, हरि चरणों से लगो ॥ प्रभु० ॥

भजन ६१

(जीवो २ महाराजा बहादुर जीवो जी जीवो २ । इसतर्ज़ में)
आवो २ सब सखियाँ मिल के आवोरी गावो २ बधाई, ॥
ऐप्यारी हाँरे गावो २ बधाई ऐप्यारी ॥ आवो० ॥
रामचन्द्र दशरथ घरजन्मे, कौशल्या फूली ना समावरी ॥
एकही मुख से कहाँ लगबरणूँ शेषपार नहिं पावरी ॥ आवो० ॥
याचक बन में आनन्द पायो मनमाँगो बर पायोरी ॥
कृष्णदास तुम भी कछु माँगो, मिलेगो मन को भायोरी ॥ आवो० ॥

भजन ६२

(रे मैं किस से करूँ नाला, मुझे डरतो नहीं है। इसतर्ज़ में)
रे मैं तुझ से करूँ नाला, मेरा दाता तुही है रे ॥ मेरा० ॥
जहाँ में खोजा वहुत ढूँढा, न तुझ सा पाया रे ॥
तुझसा तो तुही है मेरा, दिलवर भी तुही है रे ॥ मेरा० ॥
कहो जी साँवरे मोहन, कहाँ है बास तेरा रे ॥
वो हँस के ये फर्माया, कि प्रेमी के दिलों में रे ॥ मेरा० ॥
कहानी दर्द की मेरी, सुने कौन तेरे विना रे ॥
कृष्णदास तेराहै, मेरा मालिक भी तूही है रे ॥ मेरा० ॥

भजन ६३

(क्या हैं कच्चे अनार नार तोरी चोली में ॥ इस तर्ज़ में)
आवो राधेरमण आप, वसो मेरे हिरदे में ॥ वसो० ॥
मैं हूँ दास तेरे चरणों का प्यारे, मोकों रखोजी तेरे छाये ॥
जुगल मनोहर जोड़ी तिहारी, वसावोजी नयनों माँये ॥ वसो० ॥
जग जंजाल देख दिल काँप्यो, विगड़ीं को देवोजी बनाये ॥
कृष्णदास को तेरो आसरो, और ना दूजो सहाये ॥ वसो० ॥

भजन ६४

(कहूँ क्या रंग इस गुलका, आहाहाहा, ओहोहोहो। इस तर्ज़में)
सुनो मोहनज़रा अरजी, आहाहाहा, ओहोहोहो।
करो तामीलज़रा जलदी, आहाहाहा, ओहोहोहो ॥ सुनो० ॥
छुड़ाने को गईगोपी, तेरा यह बाँकपन सारा।
हुई खुद घरसे वो बाँकी, आहाहाहा, ओहोहोहो ॥ सुनो० ॥
निठुर है श्याम तू उनको, रखा घरका न बाहर का।
जहाँ से हाथ धोबैठी, आहाहाहा, ओहोहोहो ॥ सुनो० ॥
वफ़ा तो राहली अपनी, जफ़ा की अब हुई बारी।
कहाँ ठहरेगी लाचारी, आहाहाहा, ओहोहोहो ॥ सुनो० ॥
सुनी कृष्णदास की वानी, हँसे प्रभु श्रीगिरिधारी।
धरम की नावहैभारी, आहाहाहा, ओहोहोहो ॥ सुनो० ॥

भजन ६५

(जफ़ायें करते जाते हैं, पसेमा होते जाते हैं ॥ इस तर्ज़में)
हमारेदर्द की कहानी, वो मोहनप्यारे क्या जाने-
वो अपने रसमें मतवाले, गैर के दिल की क्या जाने ॥ हमारे० ॥
यहाँ सखियाँ वहाँ कान्हा, वहाँ मथुरा यहाँ बृजहै।
वो बन यादव पति महाराज, ग्वालिन को वो क्या जाने ॥ हमारे० ॥
कहो यह कान्ह से जाकुछ-याद है माखन चुराने की।
वोहँसके यहलगे कहने, चुराने कोहम क्या जाने ॥ हमारे० ॥
वोही नन्दलाल वोही मैया, वोही गोपी वोही गैया।
नये नये नेह अबलागे, पुरानी प्रीति क्या जाने ॥ हमारे० ॥
अहो कृष्णदास तुम चेरे, बने ऐसे निठुर ही के।
वो खेवट बेखबर है पार, करना नाव क्या जाने ॥ हमारे० ॥

भजन ६६

(जीवो २ महारानी प्यारी, एजी वाह २ वाह ॥ इस तर्ज़में)
गावो गावो मुबारिक सखियाँ, एजी वाह २ वाह।
देवो देवो मुबारिक गुइयाँ, एजी वाह २ वाह ॥ गावो० ॥
भोलाशंभु दातार, जिनके पुत्र दयाल।

गणपत बड़े गुणकारी, एजी वाह २ वाह ॥ गावो० ॥
प्रथम पूजो इनको ही, पहिले ध्यावो इन को ही ;
विघ्न हरण मेरो संकट निवारोजी कृष्णदास निर्भयगुण गावो,
एजी वाह २ वाह ॥ गावो० ॥

भजन ६७

(जबतक पृथ्वी पै है गङ्गा की धारा ॥ इस तर्ज़में)
मैं बाट तकत तोरी, कबसे श्याम बिहारी ।
मेरी टेर सुनोजी आपही कुञ्ज बिहारी ॥ मेरी टेर० ॥
क्या रासरंग में नाचरहे महाराजा । गोपिन के संगमें घूमरहे सरताजा ॥
क्या ग्वालसंग गऊ बछरे धेनुचराता । हरि ! कुंजगलिन में आप फिरो मदमांता ॥
मैं टेरत टेरत थाकगयो गिरधारी ॥ मेरी टेर० ॥
करुणा निधान भगवान सुनोजी बानी । क्यों निद्रा में रहे पौढ़ नींद घेरानी ।
करो दीनन की प्रतिपाल दीनहितकारी । अब दीनबन्धु की बान छोड़दइ सारी ।
ममबेर क्यों मौन गही बनवारी ॥ मेरी टेर० ॥
गजबंधन काटन एक पल में धाये हो । प्रह्लाद की खातिर नरसिंह तनु धारे हो ।
भक्तन में जहाँ २ होय अकाज घनेरो । तहाँ २ सहायक होय काज सारे हो ।
हरि ! हरोजी मेरी पीर बड़ी है भारी ॥ मेरी टेर० ॥
हरि भक्तन के प्रतिपालक किनने बिलमाये । सब भक्तन को छिटकाय आप कहाँ छाये ।
है अलख अभेद तेरो रूप भेद क्यों पाये । श्रीनटनागर बृजचन्द्र शरण तोरी आये
कृष्णदास को निर्भयआश है तेरी बिहारी ॥ मेरीटेर० ॥

कवित्त ६८

आवोजी मुकुटवारे तोरी मैं बलैया लेऊँ, काछनी कछायके नचाऊँ मोरे आँगना ।
मिश्री मिलाऊँ दूध छान के ओटाय लाऊँ, पीवेगा मेरा छबीला प्यारा मोहना ॥
हाहा मैं खाऊँ श्याम पइयाँ परूँजी कान्ह, तुम को कसम है मेरी मोकों नाँहि भूलना ।
कृष्णदास को है एक आसरो तिहारो प्रभु, सब जग छोड़के आयोहै तेरे शरना ॥ १ ॥

सवैया ६९

मैं कासे कहूँ अब हेरीसखी, हितकी चितकी मनकी बतियाँ ।
कहां नन्द दुलारो जाय छिप्यो उन के बिन सूनी है सेजरियां ॥
तलफै जियरा धड़कै छतियां, अटके नयना सटकत प्राणा ।
कृष्णदास को अब रक्षक को है गोविन्द ! रखोजी तुम छइयाँ ॥ १ ॥

कुण्डलिया ७०

मेरी नयनों औटते दूर नहो एक पल ।
वह शुभ घड़ी कब आयगी जो सुनूँ तिहारे वैन ॥
सुनूँ तिहारे वैन सुनोजी नन्द के लाला ।
सबघर बारहिं छोड़ लियी है तुमरी शरणा ॥
कृष्णदास के स्वामीकी बड़ी अनोखी चाल ।
मन्द हँसन में गोपीका मोहलई तत्काल ॥

भजन ७१

(अपार तेरी माया, माया है तेरी अपार । इसतर्ज़ में)
किलाजी मेरी नैया खेवो बल बांहें पसार ।
बोझल पापों से खेईन जावे, अनगिनती हैं खोट अपार ॥ किला० ॥
निर्धन को धन देवो अन्धे को नेत्र देवो, पापी के मेटो विकार ॥ किला० ॥
नयनों में तेज देवो मन मांही प्रेम देवो, झाँकी में लेऊँ निहार ॥ किला० ॥
कृष्णदास को भी बखशो कुछ स्वामी, दया भक्ति और उपकार ॥ किला० ॥

भजन ७२

(घर से यहां कौन खुदा के लिए लाया मुझको । इस तर्ज़ में)
श्याम प्यारे से मुलाकात हमारी कब होय ।
उनके दरबार में यह अर्ज़ हमारी कबहोय ॥ श्याम० ॥
वो सुनें हाल मेरा मैं करूं रोरो के बयां ।
तूनें जग जाल में फाँसा यह रिहाई कब होय ॥ श्याम० ॥
दुनियां के ऐश से हम गुजरें तो गुजर जायें ।
छूटे ना चर्ण तेरे आस ये पूरण कब होय ॥ श्याम० ॥
मनवच कर्म से यह प्रार्थना हरी से मेरी ।
राम रटना हर घड़ी जिन्हा से जारी कब होय ॥ श्याम० ॥
अब कृष्णदास को है शरनो श्रीगोविन्द को ।
छोड़ूना द्वार मेरे श्याम के दरशन कब होय ॥ श्याम० ॥

भजन ७३

(मोसे बोले यान बोले मेरी सुनी अनसुनी मैं तोय ना छोड़ूँगी । इसतर्ज़ में)
मोहन देख जगत चित चकित भयो जग भरम में आपा भुलायदियो ॥ मोह० ॥

भजन ७४

श्रीराधेश्याम की छवि की बलिहारी मैं बलिहारी।
जिन्हों के नाम लेने से गति होवेगी हमारी ॥ श्रीराधे० ॥
मुकुट शिरपै ज्यों दमके, कुण्डल झलके ज्यों श्रवणन में।
गले वैजन्ति माला की, बलिहारी मैं बलिहारी ॥ श्रीराधे० ॥
हाथ गुजवन्ध और पोंहची की, गति न्यारी कहूँ न्यारी।
चरण नूपुर के बाजन की, बलीहारी मैं बलिहारी ॥ श्रीराधे० ॥
नासिका में बुलाक राजे, अधर मुरली मधुर बाजे।
सुनत तिहुं लोक सब जागे, कहै बलिहारी मैं बलिहारी ॥ श्रीराधे० ॥
धरूं मैं ध्यान नितनेरा, अरज कृष्णदास करै तेरा।
चरणकी शरण रहूं तेरे, कहूँ बलिहारी मैं बलिहारी ॥ श्रीराधे० ॥

भजन ७५

(और रूसे तो सबकोई रूसो, भगवत रूसा नाचहिए। इसतर्ज़ में)
दीनदयाल गोविन्द साँवरा, मैं शरण तेरे आई ॥ दीनद० ॥
माँखी सहत में लिपट जात ज्यों, मैं सनरही पापोंमाँही।
महादुखी मैं जन्म जन्म की, सुखना देत कहीं दिखलाई ॥ दीनद० ॥
तुम से अरज करूं क्या स्वामी, तुमसे कछु नाहिं छुपी राई ॥ दीनद० ॥
शरण शरण मैं शरण तुम्हारी, लाजरखो श्रीगिरिधारी।
हे गोविन्द ! कृष्णदास को तेरे, रखो पीत पट की छाँही ॥ दीनद० ॥

भजन ७६

(बांके साँवरिया हो कन्हैया मोको तारनारे। इसतर्ज़ में)
वारीजाऊँ नाम पै तेरे श्रीकृष्ण प्यारे रे।
शेष रटत है तेरे नाम को, सहस्र जिव्हा से पारन पायो गिनत गिनत थाके हैं त्रिपुरारी रे ॥ वारी० ॥
ब्राह्मण एक अजामिल पापी निशिदिन चोरी में अनुरागी, अन्त में नाम लियो नारायण, आवो नारायण प्यारे रे ॥ वारी० ॥
नाम प्रताप से बन्धन छूटे, विष्णुलोक वो छिनमें पायो कृष्णदास को संकट अबके टारो रे ॥ वारीजाऊँ० ॥

भजन ७७

(कहां लगाई देर हो सांवरिया रे । इस तर्ज़ में)

कहां लगाई देर हो कन्हैया रे । कहां०

के मधुबन को देख लुभायो, के कुब्जा लियो घेर । के राधा बातन बिलमाये, के गैया लियो घेर ॥ हो कन्हैया० ॥

टेरत २ थाक गयो मैं, काहे को कीन्ही देर । मेरे अवगुण देख डराये, याते किई अबेर ॥ हो कन्हैया० ॥

सिल्ला तैनें छिन में तारी अब कृष्णदास की बेर ॥ हो कन्हैया० ॥

भजन ७८

(नाथ कैसे गज को फन्द छुडायो । इस तर्ज़ में)

गोविन्द तेरे प्रेम की अकथ कहानी, जानी २ गोविन्द मन लुभानी । गोविन्द०

प्रेम के कारण वैकुण्ठ छोड्यो, व्रज में आय विराजे ।

माखन चोरन चीर छिपावन, दानी कहावन आये ।

नाम दूध को काम आपनो, दूध के भाजन फोरे ।

यमलार्जुन वृक्ष उद्धरन, हाथ बँधाये याते ।

दुर्योधन षट्रस लेआयो, मोहन भोगलगाने ।

दुर्योधन को छोड के मोहन, छिलका विदुरघरचाखे ।

नीच भीलनी बेर ले आई, रामचन्द्र के काजे ।

करमा की खिचड़ी अति नीकी, वासेही भोग लगाये ।

शिवब्रह्मादिक पच पच हारे, नारद थाह न पाये ।

कृष्णदास पै यही महर हो, प्रेम के भजन उचारे ।

भजन ७९

(मैं जोगी जस गायारे बाला, मैं जोगी जस गाया । इसतर्ज़में)

मन रामभरोसे रहोरे, मनवा राम भरोसे रहोरे ॥ मनवा० ॥

जो करम अकरम बनआवे, मनसों हरि को अरपोरे ॥ मनवा० ॥

कृष्णदास लियो गोविन्द शरणो, वो मालिक है खरोरे ॥ मनवा० ॥

भजन ८०

(भोजन करूँ या भूखा रहूँ या वस्त्र पहरया हूँ ना । इसतर्ज़ में)

रामरटो मन रामरटो मन रामरटो सब काम तजो ।

लाज तजो घरबार तजो, परिवार तजो मनहरी भजो ।

कृष्ण मिटावें क्लेश तेरे श्याम सदा रहै संग तेरे ।
नारायण नरतन को तारे, हरि हरैतेरी गुराई ।
गोविन्द गिनेनहिं अवगुनतेरे, भूलचूक ज्यो धनआवे ।
धरणीधर तोय धीरज बख्शे, मन शान्ति हो छिनमाँही
परमेश्वर पल पल में तोकों, मनवांछित पूरे मनकी ।
परशुराम परिहरे पीरसव, बुद्धदेव तोय देबुद्धी ।
श्रीजगदीश देख मनतेरे, जग जंजाल को दूर करे ।
श्रीनरसिंह भयङ्कर तेरे, सभी उपद्रव शान्त करै ।
कान्ह करे कल्याण तेरो, केशव कलिमल को नाश करे ।
मुरलीधर मन की दुविधा को, तेरी पलमें छार करे ।
नन्द नदन तो से निर्धन के, लक्ष्मी से भण्डार भरे ।
मोहनी रूप मोहें मन तेरो, राग द्वेष को दूरकरे ।
वामन बाल रूप भोलेमन की तृष्णा को नाश करे ।
ऋषभदेव मेटें तीनों ऋण हयग्रीव हिरदै बसे ।
धन्वन्तरी धर्म सब रक्खे, कल्की माया नाश करे ।
मच्छ रूप करे महर तोय पै, कच्छप करै क्रोध को दूर ।
व्यास मिटावे तिमिर तेरो, हृदय ज्ञान सें करै प्रकाश ।
दत्तात्रेय के डर से तेरे, काम क्रोध अरु लोभ भगे ।
अनन्त तेरे नाम निरंजन, नारद शारद थकित भये ।
कृष्णदास पर कृपा करो, गिरिधर रखोजीकरकी छैयाँ ।
लाज तजो घरबार तजो, परिवार तजो मन हरि भजो ।

भजन ८१

(मन भैयारे, गाफ़िल मे नाहिं रहनारे । इस तर्ज़ में)

मन भैयारे, हरिसे नेह लगाना रे । मन०
भाई बन्धु अरु नाती बेटा, ये मतलब के साथी हैं ।
अजहूँ सीताराम सुमरले, नाहिं पीछे पछताना रे । मन०
तन्त ही क्या रक्खा दुनियाँ में, जिस में तू भरमाता है ।
श्याम सुन्दर से नेह करो मन, अन्त वोही रखवारा रे । मन०
दुनियाँ है ज्यों बूँद ओस की, धूप पड्याँ ढलजावे है ।
हरि से प्रीति करो मन में, पूरा होय निबाहा रे ॥ मन० ॥

जग स्वारथ का मेला है, परमारथ के श्री गिरिधर हैं।
कृष्णदास मन दृढ कर राखो, जो तोय पार उतरना है ॥ मन० ॥

भजन ८२

(प्रीति गिरिधर से न की तो क्या किया कुछभी नहीं। इस तर्ज़ में)
रे अधम नर तू जमाने की दुरङ्गी देखले।
देखले सरकार और दरबार सब तू देखले ॥ रे अधम० ॥
है बडे छोटे की न पहचान भी कुछ जहान में।
अक्ल तो जहाँ से उठी, बदकार जगको देखले ॥ रे अधम० ॥
नीच तो घर में विराजे, फिरते उत्तम दरबदर।
ढङ्ग निराले हैं ज़माने के, तू घर घर देखले ॥ रे अधम० ॥
हो रिहाई जहाँन से, रहने से तो हाँसिल ही क्या।
कृष्णदास जैसे बने ईश्वर के दर्शन देखले ॥ रे अधम० ॥

भजन ८३

(श्री राज माता गुन गाये, नगरी महाराज महाराज। इस तर्ज़ में)
जय हो जय हो गोविन्द प्यारी तुलसी महारानी महारानी।
दीननकी हो सुध लेनी, । तुलसी महारानी महारानी ॥
श्री राधादामोदर के दर्शन से पातक भागे।
सींचत सींचत तुलसी के, सब तन ताप नशाये ॥ तुल० ॥
मन मोहन के मनको लुभानी, मङ्गल मोद भुगानी।
अन्त में जम को भय नहिं व्यापै, दो वैकुण्ठ निसैनी ॥ तुलसी० ॥
श्री राधा बाधा हरो मेरी, जगकी हो तुम स्वामिनी।
कृष्णदास को भवसागर से, छिन में पार लगानी ॥ तुलसी० ॥

भजन ८४

(साँवरियो नन्दकुमार जनम्यों गोकुल में। इस तर्ज़ में)
श्री लक्ष्मी देवी माय मोपै महर करो। मोपै महर करो॰
समुद्र नन्दिनी कमलारानी, अरे मनावे तोकों सब संसार ॥ मोपै महर० ॥
लक्ष्मी पति प्यारी जगमाता अरे जगत कों तेरोही आधार। मोपैमहर
लक्ष्मी शारदा शक्ति, गौरी, अरे तेरे नामको अन्तनपार। मोपै० ॥
जोनिर्धन तोय ध्यावे माता, अरेधनादे छिनमें तू दातार ॥ मोपैमहर० ॥

कृष्णदासपै तुमही माता, अरे करो कृपाकी बोछार ॥ मोपैमहर० ॥
मोपै महरकरो श्रीलक्ष्मी देवी माय मोपै महरकरो ।

भजन ८५

(न सेवन अपना सेवा है नहम फर्याद करते हैं । इसतर्ज़ में)
दरश मुझको श्याम प्यारे, दिखादोगे तो क्याहोगा ।
निज श्री मुख से मधुरबानी सुनादोगेतो क्याहोगा । दरश० ॥
हमें धन चाहिए न दौलत, न घरचाहिए नज़र चाहिए ।
फकत तेरी महर चहिए, करम करदो तो क्याहोगा ॥ दरश० ॥
इन्तजारी है दरशनकी तलबगारी है दरशनकी ।
अरज कृष्णदासकी मोहन जो सुनलोगेतो क्याहोगा ॥ दरश० ॥

(दोहा)

श्रीराधा बाधाहरो, करो दुविधा को दूर ।
हीन बुद्धिको मेटके, बुद्धिदेवो भर पूर ॥ १ ॥
जय श्री नन्द कुमार, जय श्री कीरति नन्दिनी ।
भूल चूक कछु होय, दूरकरो जग वन्दिनी ॥ २ ॥
हे कमलापति साँवरे, हे प्रभु श्री करतार ।
अशुध अनंछर होय कछु, देवो आप सुधार ॥ ३ ॥
मैं मूरख खल बुद्धिहूं, भरम रह्यो जगमाँय ।
तुम समरथ भगवान हो, राखो अपनी छाँय ॥ ४ ॥
कृष्णदास की नाव यह, डूबरही मझधार ।
गोविन्द हाथ बढाय के आप लगा दो पार ॥ ५ ॥

इति श्री कृष्णदास कीर्तनम् समाप्तम् ।

शुभमस्तु ।

श्रीराधा कृष्णार्पण मस्तु । श्रीराधा प्यारेकी जयहो ।
श्रीगुरु महाराज की जय बोलो ।
श्रीगङ्गा महाराणी की जयबोलो ।
सबसन्तों की जयबोलो ।
श्री मानसिंह महाराजकी जयबोलो ।
सब उत्तम मध्यम नीचकी जयहो ।

ॐ तत्सत् श्री कृष्णार्पण मस्तु ।